Marwar's Ancient Intelligence: A Historical Analysis of Rao Maldeo's Information System (1532–1562 AD)

मारवाड़ का 'अभेद्य' सूचना तंत्र: महाराजा मालदेव राठौड़ और गिरी-सुमेल (1544 ई.) का कूटनीतिक विश्लेषण

लेखक (Author): गोविंद मालवीय (REAL HI STORY)

प्रकाशन तिथि (Date of Publication): 11 अगस्त 2026

श्रेणी (Category): मध्यकालीन भारतीय इतिहास / सैन्य एवं कूटनीतिक अध्ययन

प्लेटफ़ॉर्म (Target Platform): Internet Archive (Digital Library)

विषय-सूची (Table of Contents)

1. प्रस्तावना (Introduction)
2. महाराजा मालदेव का त्रि-स्तरीय सूचना ढांचा (3-Tier Intelligence Architecture)
3. डिंगल साहित्य और सांकेतिक कूट-संदेश (Cryptographic Communication in Dingal)
4. गिरी-सुमेल युद्ध (1544 ई.) का साइकोलॉजिकल वॉरफेयर (Psychological Warfare)
5. प्राथमिक ऐतिहासिक साक्ष्य एवं ग्रंथ (Primary Historical Sources)
6. निष्कर्ष (Conclusion)
7. डिस्क्लेमर एवं सर्वाधिकार (Disclaimer & Copyright)

© August 11, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

1. प्रस्तावना (Introduction)

16वीं सदी का भारत तीव्र सैन्य परिवर्तनों और साम्राज्यवादी विस्तार का काल था। जब भी मध्यकालीन भारत में मारवाड़ (जोधपुर) और दिल्ली सल्तनत/सूरी साम्राज्य के संघर्षों की समीक्षा की जाती है, तो 1544 ई. का ऐतिहासिक **गिरी-सुमेल युद्ध (Battle of Giri-Sumel)** प्राथमिक महत्व रखता है। यह युद्ध केवल पारंपरिक अस्त्र-शस्त्रों से नहीं, बल्कि 16वीं सदी के एक उन्नत '**सूचना एवं कूटनीतिक तंत्र**' **(Intelligence and Diplomatic Network)** पर लड़ा गया

था। महाराजा मालदेव राठौड़ (1532–1562 ई.) के सूचना जाल ने दिल्ली के सुल्तान शेरशाह सूरी को सैन्य बल के स्थान पर 'डिसइन्फॉर्मेशन' (Disinformation) की रणनीति अपनाने पर विवश कर दिया था।

© *August 11, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).*

2. महाराजा मालदेव का त्रि-स्तरीय सूचना ढांचा (3-Tier Intelligence Architecture)

मारवाड़ के विशाल साम्राज्य (52 युद्धों द्वारा विजित 58 परगने) की सुरक्षा और थार रेगिस्तान के भौगोलिक वातावरण में त्वरित सूचना-प्रवाह हेतु मालदेव ने तीन मुख्य स्तंभों पर आधारित व्यवस्था विकसित की थी:

- **हरकारे (Message Relayers):** मारवाड़ की सीमाओं और प्रमुख व्यापारिक/सैन्य मार्गों पर 15 से 20 किलोमीटर के अंतराल पर स्थापित चौकियों पर तैनात वेतनभोगी घुड़सवार, जो रिले-पद्धति से संदेशों का आदान-प्रदान करते थे।
- **पगी (Desert Trackers):** रेत पर घोड़ों, ऊंटों और सैनिकों के पदचिह्नों (पग) को पढ़कर दुश्मन की संख्या, तोपखाने, रसद और गति का सटीक आकलन करने वाले निपुण टोही जासूस।
- **चारण, भाट एवं पुरोहित (Diplomatic Immunity / Cross-Border Emissaries):** राजपूताना की सांस्कृतिक परंपरा में इन्हें '**अवध्य**' (जिन पर प्रहार न किया जा सके) माना जाता था। मालदेव ने इस सामाजिक मर्यादा का उपयोग दूतों के रूप में किया, जो निर्भय होकर विरोधी राज्यों के दरबार में उपस्थित होकर वहां की खुफिया जानकारी एकत्र करते थे।

© *August 11, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).*

3. डिंगल साहित्य और सांकेतिक कूट-संदेश (Cryptographic Communication in Dingal)

डिंगल (साहित्यिक राजस्थानी) केवल वीर रस की रचनाओं तक सीमित नहीं थी, बल्कि युद्ध काल में इसके रूपक (Metaphors) और अनयोक्तियों का प्रयोग '**गुप्त कोड्स**' के रूप में किया जाता था:

उदाहरण 1 (रसद एवं सैन्य गति):

"कालो बादळ घोरियो, गाजै सावण री झड़ी। झीणी-झीणी बूंदियां, नदियाँ जल सो खड़ी॥"

- **कूट सैन्य अर्थ:** 'काले बादल' का अर्थ विशाल शत्रु सेना का आगमन; 'सावण री झड़ी' तोपखाने/धनुर्धरों की तैयारी; तथा 'जल सो खड़ी नदियां' रसद आपूर्ति मार्ग बाधित होने का पूर्व-संकेत था।

© ***August 11, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).***

उदाहरण 2 (हमले की दिशा एवं समय):

"उत्तर दीसां उडियो काग, दक्खिण में ठाडो भयो बाज। सांझ पड़े जद्दे झपटसी, पंख पसारे आज॥"

- **कूट सैन्य अर्थ:** उत्तर (दिल्ली/आगरा) से संदेशवाहक की स्थिति, मुख्य दुश्मन सेनापति का दक्षिण सीमा पर डेरा डालना, और सूर्यास्त के समय संभावित आक्रमण (Night Raid) का गुप्त निर्देश।

© ***August 11, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).***

4. गिरी-सुमेल युद्ध (1544 ई.): 'डिसइन्फॉर्मेशन वॉरफेयर'

1544 ई. में जब शेरशाह सूरी 80,000 की सेना के साथ जैतारण (पाली) के पास बाबरा में एक महीने तक पड़ा रहा, तो वह मालदेव की 50,000 की अनुशासित सेना और सघन जासूसी जाल के कारण सीधे हमले का साहस नहीं कर सका।

शेरशाह ने बीकानेर के कल्याणमल और मेड़ता के वीरमदेव के माध्यम से आंतरिक असंतोष का लाभ उठाया और मालदेव के सेनापतियों (**जैता और कूंपा**) के नाम से फर्जी पत्र (Forged Letters) तैयार करवाए। ये पत्र मालदेव के शिविर के पास भिजवाए गए, जिससे मालदेव को अपने निष्ठावान सेनापतियों पर संशय हो गया। यद्यपि मालदेव पीछे हट गए, परंतु जैता और कूंपा ने सीमित सैनिकों के साथ ऐसा भीषण युद्ध लड़ा कि शेरशाह को कहना पड़ा:

"मैंने मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिंदुस्तान की बादशाहत खो दी होती।"

5. प्राथमिक ऐतिहासिक साक्ष्य एवं ग्रंथ (Primary Historical Sources)

1. **तारीख-ए-शेरशाही (अब्बास खान सरवानी):** शेरशाह द्वारा जाली पत्रों (Forged Letters) का सहारा लेने का प्रत्यक्ष ऐतिहासिक वर्णन।
2. **मुहणौत नैणसी री ख्यात एवं मारवाड़ रा परगना री विगत:** पगी व्यवस्था, हरकारों के संचालन और मालदेव के प्रशासनिक ढांचे का प्रामाणिक ब्यौरा।
3. **तारीख-ए-फिरिश्ता (कासिम फिरिश्ता):** मालदेव के राजनीतिक व जासूसी प्रभाव की पुष्टि।
4. **जोधपुर राज्य की ख्यात:** मध्यकालीन मारवाड़ के दूत-कर्म और युद्धकालीन पत्राचार के साक्ष्य।

© ***August 11, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).***

6. निष्कर्ष (Conclusion)

16वीं सदी में मारवाड़ का सूचना तंत्र अपनी भौगोलिक और सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार अत्यंत सघन और परिणामी था। इसे आधुनिक संदर्भ में 'देशी RAW' कहना एक **रूपक (Metaphor)** है, जो यह स्पष्ट करता है कि मध्यकालीन भारत में युद्ध का निर्णय केवल शारीरिक बल से नहीं, बल्कि कूटनीति, सूचनाओं और मनोवैज्ञानिक युद्ध (Psychological Warfare) से तय होता था।

© ***August 11, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).***

Marwar's Ancient Intelligence: A Historical Analysis of Rao Maldeo's Information System (1532–1562 AD)

Author: Govind Malviya (REAL HI STORY)

Publication Date: August 11, 2026

Category: Medieval Indian History / Military & Diplomatic Studies

Target Platform: Internet Archive (Digital Repository)

Table of Contents

1. Introduction
2. The 3-Tier Intelligence Structure of Rao Maldeo
3. Cryptographic Communication in Dingal Literature
4. The Battle of Giri-Sumel (1544 AD) & Disinformation Warfare
5. Primary Historical Sources
6. Conclusion
7. Disclaimer & Copyright Notice

1. Introduction

16th-century India was characterized by territorial expansion and diplomatic re-alignments. In the military history of medieval Rajputana, the **Battle of Giri-Sumel (1544 AD)** between Maharaja Maldeo Rathore of Marwar (1532–1562 AD) and Emperor Sher Shah Suri represents a milestone. Beyond conventional arms, this conflict was governed by an advanced **Intelligence and Information Network**. Maldeo's reconnaissance capability forced Sher Shah Suri to rely on psychological warfare and disinformation tactics rather than a direct frontal assault.

© August 11, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

2. The 3-Tier Intelligence Structure of Rao Maldeo

To maintain operational command over 58 annexed *parganas* across the Thar Desert, Maharaja Maldeo developed a structured intelligence mechanism:

- **Harkaras (Message Relayers):** Salaried horsemen posted at specialized relay outposts located every 15 to 20 kilometers along key trade and military corridors, facilitating rapid communication.
- **Pagis (Desert Trackers):** Expert reconnaissance agents capable of analyzing footprints (*Pag*) on desert sand to estimate troop strength, artillery capability, supply columns, and vector of movement.
- **Charans, Bhats, and Purohits (Diplomatic Immunity / Cover):** Bards and priests held the status of **'Avadhya'** (Inviolable under laws of war). Maldeo leveraged this cultural protection for emissaries who gathered intelligence within foreign courts.

3. Cryptographic Communication in Dingal Literature

Dingal (literary Rajasthani) served as a medium for encrypted military dispatches through metaphors and hidden meanings (*Vyanjana*):

Example 1 (Logistics and Troop Movements):

"Kalo Badal Ghoriyo, Gajai Sawan Ri Jhadi; Jhini-Jhini Bundiyan, Nadiyan Jal So Khadi."

- **Decoded Signal:** 'Dark clouds' represented enemy troop concentration; 'Sawan rains' denoted artillery/archer readiness; 'river levels' indicated disrupted logistics or secured water points.

© August 11, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

Example 2 (Tactical Direction and Timing):

"Uttar Disan Udiyo Kag, Dakkhin Mein Thado Bhayo Baj; Sanjh Padai Jadde Jhapatsee, Pankh Pasare Aaj."

- **Decoded Signal:** Inbound intelligence from the North (Delhi/Agra), positioning of the primary enemy commander on the southern flank, and an alert for a dusk or night attack.

4. The Battle of Giri-Sumel (1544 AD): Disinformation Warfare

Camping at Babra near Jaitaran for nearly a month with 80,000 troops, Sher Shah Suri faced dwindling logistics and Marwar's vigilant reconnaissance network.

Unable to break Maldeo’s defensive lines directly, Sher Shah manufactured **Forged Letters** implicating Maldeo’s senior generals, **Jaita and Kumpa**, in a fake conspiracy. The intercept of these planted letters created internal suspicion, prompting Maldeo to order a tactical withdrawal. However, Jaita and Kumpa engaged Suri's forces with a smaller vanguard, inflicting severe casualties and leading Sher Shah to state:

"I had nearly lost the empire of Hindustan for a handful of millet."

© August 11, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

5. Primary Historical Sources

1. **Tarikh-i-Sher Shahi (Abbas Khan Sarwani):** Contemporary account validating the deployment of forged letters by Sher Shah.
2. **Nainsi ri Khyat & Marwar ra Pargana ri Vigat (Muhta Nainsi):** Primary documentation of the *Pagi* network, *Harkaras*, and Maldeo's administrative structure.
3. **Tarikh-i-Firishta (Firishta):** Records the regional military influence and intelligence caution exercised during the campaign.

4. **Jodhpur Rajya ri Khyat:** Archival evidence of Marwar’s diplomatic missions and wartime logistics.

6. Conclusion

The information network of 16th-century Marwar was an adapted regional intelligence system. Describing it as a 'Desi RAW' serves as a **literary metaphor** emphasizing that victory in medieval warfare relied on reconnaissance, diplomacy, and psychological warfare alongside military power.

© August 11, 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).